GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी डिजिटल मीडिया में ए.आई. टूल्स के उपयोग की स्वीकार्यता एवं प्रभाव का अध्ययन

हर्षिता सैनी
छात्रा, स्नातकोत्तर (पत्रकारिता)
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
शोध निर्देशक
श्री सागर कनौजिया
शिक्षक,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश

यह अध्ययन हिंदी डिजिटल मीडिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) टूल्स के उपयोग, उनकी स्वीकार्यता, प्रभाव तथा दर्शकों की धारणा का विश्लेषण करता है । डिजिटल पत्रकारिता के क्षेत्र में ए.आई. के बढ़ते उपयोग ने समाचार निर्माण, प्रसार और उपभोग के स्वरूप को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिससे इसके सामाजिक और नैतिक प्रभावों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है ।

इस शोध में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न आयु, लिंग एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि के उत्तरदाताओं से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किए गए । अध्ययन में ए.आई.-जनित समाचारों के उपयोग की आवृत्ति, दर्शकों का विश्वास, स्वीकार्यता, नैतिक चिंताओं तथा पारंपरिक और ए.आई.-आधारित समाचारों के बीच तुलना का विश्लेषण किया गया ।

सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए प्रतिशत एवं काई स्क्वायर परीक्षण का उपयोग किया गया, जिससे विभिन्न चर के बीच संबंधों का परीक्षण किया जा सके । परिणामों से संकेत मिलता है कि ए.आई.-जनित समाचारों का उपयोग बढ़ रहा है, किन्तु दर्शकों का विश्वास अभी मिश्रित स्थिति में है । पारदर्शिता, नैतिकता एवं विश्वसनीयता जैसे कारक दर्शकों की स्वीकार्यता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं । साथ ही, जनसांख्यिकीय कारकों के आधार पर धारणा में अंतर भी पाया गया ।

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

यह अध्ययन हिंदी डिजिटल मीडिया के संदर्भ में ए.आई. के उपयोग को समझने में योगदान देता है तथा पत्रकारिता में ए.आई. के जिम्मेदार उपयोग के लिए नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव प्रदान करता है । हालांकि, यह अध्ययन सीमित नमूना और स्वयं-रिपोर्टेड डेटा पर आधारित है, अतः भविष्य में अधिक व्यापक और विविध संदर्भों में शोध की आवश्यकता है ।

महत्वपूर्ण शब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई), हिन्दी डिजीटल पत्रकारिता, स्वचालित समाचार लेखन, फेक न्यूज़, एआई नैतिकता, उपयोगकर्ता दृष्टिकोण मीडिया नवाचार ।

प्रस्तावना

डिजिटल युग में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने पत्रकारिता के स्वरूप, कार्यप्रणाली और प्रस्तुति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है । विशेष रूप से हिंदी डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने समाचार उत्पादन और प्रसार की प्रक्रिया को अधिक तीव्र, सुलभ और व्यापक बना दिया है । इसी परिवर्तनशील परिदृश्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण तकनीकी हस्तक्षेप के रूप में उभरी है, जो समाचार संकलन, लेखन, संपादन, अनुवाद और वितरण जैसे विभिन्न चरणों में सक्रिय भूमिका निभा रही है ।

पिछले कुछ वर्षों में ए.आई. टूल्स, जैसे स्वचालित समाचार लेखन प्रणाली, चैटबॉट्स, डेटा एनालिटिक्स टूल्स तथा भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर, का उपयोग मीडिया उद्योग में तेजी से बढ़ा है । हिंदी डिजिटल मीडिया में भी इन टूल्स का प्रयोग विशेष रूप से हेडलाइन निर्माण, कंटेंट सारांश, ट्रेंड विश्लेषण और उपयोगकर्ता अनुकूलन के लिए किया जा रहा है । एक हालिया रिपोर्ट (Reuters Institute, 2023) के अनुसार, वैश्विक स्तर पर समाचार संगठनों में ए.आई. के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है, हालांकि इसके साथ विश्वसनीयता और नैतिकता से संबंधित चिंताएँ भी सामने आ रही हैं ।

हिंदी डिजिटल मीडिया के संदर्भ में यह परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ पाठकों का एक बड़ा वर्ग विविध सामाजिक, भाषाई और शैक्षिक पृष्ठभूमियों से आता है । ए.आई. टूल्स एक ओर जहां समाचार उत्पादन की गति और दक्षता को बढ़ाते हैं, वहीं दूसरी ओर यह प्रश्न भी उठाते हैं कि क्या यह तकनीक समाचार की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और मानवीय संवेदनशीलता को प्रभावित कर रही है । इसके अतिरिक्त, ए.आई.-जनित सामग्री में संभावित पक्षपात), फेक न्यूज़ के प्रसार और पारदर्शिता की कमी जैसे मुद्दे भी गंभीर चिंता का विषय बनते जा रहे हैं ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

इसी संदर्भ में यह अध्ययन हिंदी डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स में ए.आई. टूल्स के उपयोग, उनकी स्वीकार्यता तथा उनके प्रभाव का सर्वेक्षणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है । यह शोध विशेष रूप से यह समझने का प्रयास करता है कि दर्शक ए.आई.-जनित समाचारों को किस हद तक स्वीकार कर रहे हैं, वे इसकी विश्वसनीयता और उपयोगिता को कैसे आंकते हैं, तथा इसके प्रति उनकी नैतिक चिंताएँ किस स्तर तक मौजूद हैं ।

इस अध्ययन की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि हिंदी मीडिया पर ए.आई. के प्रभाव से संबंधित शोध अभी सीमित है, विशेषकर दर्शक-आधारित दृष्टिकोण से । अतः यह शोध न केवल इस क्षेत्र में विद्यमान शोध-रिक्ति को भरने का प्रयास करता है, बल्कि मीडिया संस्थानों, नीति-निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए भी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है ।

सन्दर्भ साहित्य की समीक्षा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) और पत्रकारिता के अंतर्संबंध पर पिछले कुछ वर्षों में कुछ शोध हुआ है ।

रॉयटर्स इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ जर्नलिज्म द्वारा प्रकाशित डिजिटल समाचार रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक स्तर पर समाचार संगठनों में ए.आई. टूल्स का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, नेशनल न्यूज़ ऑटोमेशन, पर्सनलाइजेशन और डेटा एनालिटिक्स के क्षेत्रों में (Newman et al., 2023) । यह रिपोर्ट यह भी इंगित करती है कि ए.आई. के उपयोग से समाचार उत्पादन की गति में वृद्धि हुई है, बावजूद विश्वसनीयता और नैतिकता से संबंधित चिंताएँ भी बढ़ी हैं (Newman et al., 2023) ।

इसी प्रकार, निकोलस डायकोपोलोस ने अपनी पुस्तक Automating the News में बताया है कि ए.आई.-आधारित पत्रकारिता समाचार उत्पादन की अवधारणाओं को अधिक दक्ष बना रही है, लेकिन इसमें संपादकीय नियंत्रण और नैतिक उत्तरदायित्व की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहती है (Diakopoulos, 2019) । उनके अनुसार, एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह एक गंभीर चुनौती है, जो समाचार की निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है (Diakopoulos, 2019) ।

चार्ली बेकेट द्वारा किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश मीडिया संगठनों ने ए.आई. को एक सहायक उपकरण के रूप में अपनाया है, न कि मानव पत्रकारों के प्रतिस्थापन के रूप में (Beckett, 2019) । इस अध्ययन के अनुसार, ए.आई. मुख्यतः दुहराव वाले काम जैसे डेटा प्रोसेसिंग, ट्रांसक्रिप्शन और ट्रेंड एनालिसिस में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है (Beckett, 2019) ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

भारतीय संदर्भ में, डिजिटल मीडिया के विस्तार पर कई अध्ययनों ने प्रकाश डाला है । भारतीय प्रेस परिषद और अन्य संस्थाओं की रिपोर्ट्स में यह उल्लेख किया गया है कि क्षेत्रीय भाषाओं, विशेषतः हिंदी में डिजिटल मीडिया का तेजी से विस्तार हुआ है (Press Council of India, 2022) । हालांकि, ए.आई. के उपयोग पर केंद्रित शोध अभी भी सीमित है । कुछ अध्ययनों में यह संकेत मिला है कि भारतीय मीडिया संस्थानों में ए.आई. टूल्स का प्रयोग प्रारंभिक अवस्था में है और इसे लेकर जागरूकता तथा प्रशिक्षण की आवश्यकता है (Rao & Johal, 2021) ।

इसके अतिरिक्त, ए.आई. और फेक न्यूज़ के संबंध पर भी कई शोध हुए हैं, जिनमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ए.आई. तकनीकें जहां फेक न्यूज़ की पहचान में सहायक हो सकती हैं, वहीं इनके दुरुपयोग से गलत सूचना के प्रसार का खतरा भी बढ़ सकता है ।

शोध अंतराल

उपरोक्त साहित्य के विश्लेषण से है कि पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग पर कई अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु अधिकांश शोध गुणात्मक एवं सैद्धांतिक प्रकृति के हैं । ए.आई. के वास्तविक प्रभावों का मात्रात्मक एवं डेटा-आधारित विश्लेषण सीमित है । विशेष रूप से हिंदी पत्रकारिता के संदर्भ में ए.आई. के उपयोग, दर्शकों की धारणा, तथा समाचारों की विश्वसनीयता पर गहन अध्ययन का अभाव है । इसके अतिरिक्त, ए.आई. से उत्पन्न नैतिक मुद्दों, डीपफेक तकनीक के प्रभाव, तथा पत्रकारों की भूमिका और अनुकूलन पर भी विस्तृत शोध नहीं किया गया है । अतः इन पहलुओं पर केंद्रित शोध की आवश्यकता है, जो इस अध्ययन का प्रमुख आधार है

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । यह हिंदी डिजिटल मीडिया में ए.आई. टूल्स के उपयोग और उनके प्रभाव को समझने में सहायता प्रदान करता है, जो वर्तमान समय की एक उभरती हुई प्रवृत्ति है । यह शोध दर्शकों की धारणा को केंद्र में रखता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आम पाठक ए.आई.-जनित समाचारों को किस प्रकार देखते और स्वीकार करते हैं । अध्ययन मीडिया संस्थानों को यह समझने में मदद करेगा कि ए.आई. टूल्स का उपयोग करते समय किन नैतिक पहलुओं (जैसे पारदर्शिता, विश्वसनीयता) पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । यह शोध नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह मीडिया शिक्षा और प्रशिक्षण में ए.आई. के समावेशन की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

अध्ययन का उद्देश्य

- हिंदी डिजिटल मीडिया में ए.आई. टूल्स के उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना ।
- ए.आई.-आधारित समाचारों के प्रति उपयोगकर्ताओं की स्वीकार्यता का विश्लेषण करना ।
- ए.आई. के प्रभाव का अध्ययन करना, विशेषकर विश्वास, सटीकता एवं उपयोगिता के संदर्भ में ।

अनुसंधान परिकल्पना

- ए.आई. के प्रति जागरूकता और उसके उपयोग के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है ।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन हिंदी डिजिटल मीडिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल्स के उपयोग, स्वीकार्यता एवं प्रभाव के विश्लेषण हेतु सर्वेक्ष-आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है । अध्ययन के लिए प्राथमिक डेटा का संग्रहण एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया, जिसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म द्वारा 200 प्रतिभागियों से संकलित किया गया । नमूना चयन के लिए सुविधा-आधारित सैम्पलिंग तकनीक अपनाई गई । प्रश्नावली में बहुविकल्पीय, द्विविकल्पीय तथा 5-बिंदु लाइकर्ट स्केल आधारित प्रश्न शामिल थे, जिनके माध्यम से प्रतिभागियों की अभिवृत्ति, विश्वास एवं धारणा को मापा गया । प्राप्त आंकड़ों को संख्यात्मक रूप में कोड कर सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उपयोग किया गया, जिसमें आवृत्ति , प्रतिशत तथा काय-स्क्वायर परीक्षण का प्रयोग किया गया, ताकि विभिन्न चरों के बीच संबंधों की जांच की जा सके । यह पद्धति अध्ययन के निष्कर्षों को व्यवस्थित, तुलनात्मक तथा व्याख्यात्मक रूप से प्रस्तुत करने में सहायक रही, हालांकि सुविधा-आधारित नमूना चयन के कारण निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित हो सकता है ।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल (N = 200)

चर	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
आयु	18–25 वर्ष	52	26.0
	26–35 वर्ष	49	24.5
	36–45 वर्ष	50	25.0

	46 वर्ष एवं अधिक	49	24.5
लिंग	पुरुष	68	34.0
	महिला	66	33.0
	अन्य	66	33.0
शैक्षिक योग्यता	इंटरमीडिएट	50	25.0
	स्नातक	52	26.0
	स्नातकोत्तर	49	24.5
	अन्य	49	24.5

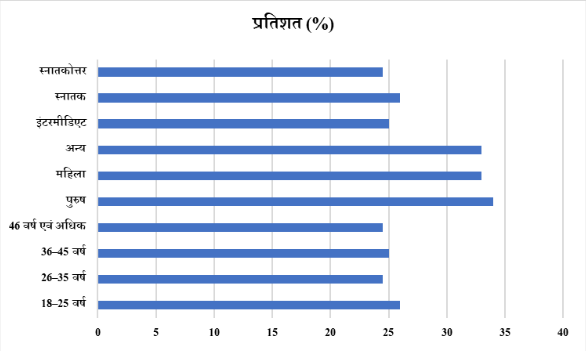

तालिका 1 में उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल प्रस्तुत की गई है । अध्ययन में कुल 200 प्रतिभागियों को शामिल किया गया, जिनमें सभी आयु वर्गों का लगभग समान प्रतिनिधित्व रहा । 18–25 वर्ष आयु वर्ग के प्रतिभागियों का प्रतिशत सर्वाधिक (26%) पाया गया, जबकि अन्य आयु वर्गों की भागीदारी भी लगभग समान रही । लिंग के आधार पर पुरुष (34%), महिला (33%) तथा अन्य (33%) श्रेणियों का संतुलित वितरण प्राप्त हुआ । शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में स्नातक स्तर के प्रतिभागियों की संख्या सर्वाधिक (26%) रही, जबकि इंटरमीडिएट, स्नातकोत्तर तथा अन्य श्रेणियों का प्रतिशत लगभग समान पाया गया । यह संतुलित जनसांख्यिकीय संरचना अध्ययन के निष्कर्षों को अधिक व्यापक एवं प्रतिनिधिक बनाती है ।

तालिका 2: ए.आई. के प्रति जागरूकता एवं उपयोग (N = 200)

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

चर	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
ए.आई. के बारे में जानकारी	हाँ	102	51.0
	नहीं	98	49.0
ए.आई. प्लेटफॉर्म का उपयोग	हाँ	98	49.0
	नहीं	102	51.0
ए.आई. समाचार उपयोग की आवृत्ति	कभी नहीं	50	25.0
	कभी-कभी	51	25.5
	अक्सर	49	24.5
	नियमित	50	25.0

तालिका 2 में उत्तरदाताओं की ए.आई. के प्रति जागरूकता एवं उपयोग से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई है । परिणामों से ज्ञात होता है कि 51 प्रतिशत प्रतिभागी ए.आई. के बारे में जानकारी रखते हैं, जबकि 49 प्रतिशत प्रतिभागी इससे परिचित नहीं हैं । ए.आई. प्लेटफॉर्म के उपयोग के संदर्भ में 49 प्रतिशत प्रतिभागियों ने ए.आई. टूल्स का उपयोग करने की पुष्टि की, जबकि 51 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इनके उपयोग से इंकार किया । ए.आई. समाचारों के उपयोग की आवृत्ति का विश्लेषण दर्शाता है कि सभी श्रेणियों में उत्तरदाताओं का वितरण लगभग समान है, जहाँ 25.5 प्रतिशत प्रतिभागी कभी-कभी ए.आई. समाचारों का उपयोग करते हैं । समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि ए.आई. के प्रति जागरूकता और उपयोग दोनों ही विकासशील अवस्था में हैं तथा उपयोगकर्ताओं के बीच ए.आई. तकनीकों को अपनाने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ रही है ।

तालिका 3: ए.आई. समाचारों पर विश्वास एवं सटीकता (N = 200)

चर	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
ए.आई. समाचारों पर विश्वास	पूर्णतः असहमत	40	20.0

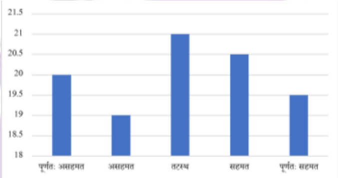

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

	असहमत	38	19.0
	तटस्थ	42	21.0
	सहमत	41	20.5
	पूर्णतः सहमत	39	19.5
ए.आई. समाचारों की सटीकता	पूर्णतः असहमत	41	20.5
	असहमत	39	19.5
	तटस्थ	40	20.0
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0
ए.आई. में कम त्रुटियाँ	पूर्णतः असहमत	42	21.0
	असहमत	40	20.0
	तटस्थ	39	19.5
	सहमत	41	20.5
	पूर्णतः सहमत	38	19.0

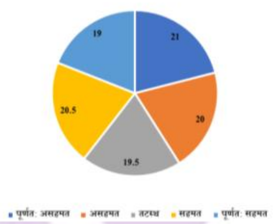

तालिका 3 में ए.आई. समाचारों पर विश्वास, उनकी सटीकता तथा ए.आई. में कम त्रुटियाँ होने संबंधी उत्तरदाताओं की धारणाओं को प्रस्तुत किया गया है । परिणामों से स्पष्ट होता है कि इन तीनों आयामों पर प्रतिभागियों की राय लगभग संतुलित और मिश्रित रही । ए.आई. समाचारों पर विश्वास के संबंध में 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने सहमति (सहमत एवं पूर्णतः सहमत) व्यक्त की, जबकि 39 प्रतिशत प्रतिभागियों ने असहमति व्यक्त की तथा 21 प्रतिशत

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

तटस्थ रहे । इसी प्रकार, ए.आई. समाचारों की सटीकता के संदर्भ में 40 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक, 40 प्रतिशत नकारात्मक तथा 20 प्रतिशत तटस्थ पाए गए । ए.आई. में कम त्रुटियाँ होने के प्रश्न पर भी समान प्रवृत्ति देखी गई, जहाँ प्रतिभागियों के विचार स्पष्ट रूप से किसी एक दिशा में केंद्रित नहीं थे । इससे निष्कर्ष निकलता है कि उत्तरदाता ए.आई. की क्षमताओं को स्वीकार तो कर रहे हैं, किन्तु उसकी विश्वसनीयता एवं सटीकता को लेकर अभी भी पूर्णतः आश्वस्त नहीं हैं ।

तालिका 4: ए.आई. समाचारों की उपयोगिता एवं स्पष्टता (N = 200)

चर	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
ए.आई. समाचारों की स्पष्टता	पूर्णतः असहमत	39	19.5
	असहमत	41	20.5
	तटस्थ	40	20.0
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0
ए.आई. समाचारों की उपयोगिता	पूर्णतः असहमत	40	20.0
	असहमत	39	19.5
	तटस्थ	41	20.5
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0

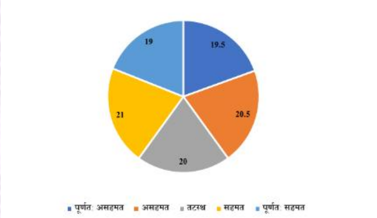

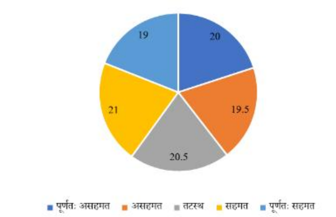

तालिका 4 में ए.आई. समाचारों की स्पष्टता एवं उपयोगिता के संबंध में उत्तरदाताओं की धारणाओं को दर्शाया गया है । परिणामों से स्पष्ट होता है कि ए.आई. समाचारों की स्पष्टता के संदर्भ में 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने सकारात्मक

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रतिक्रिया (सहमत एवं पूर्णतः सहमत) दी, जबकि 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की और 20 प्रतिशत प्रतिभागी तटस्थ रहे । इसी प्रकार, ए.आई. समाचारों की उपयोगिता के संबंध में भी लगभग 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इसे उपयोगी माना, जबकि 39.5 प्रतिशत प्रतिभागी इससे सहमत नहीं थे तथा 20.5 प्रतिशत प्रतिभागियों ने तटस्थ दृष्टिकोण अपनाया । इन निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि उत्तरदाता ए.आई.-आधारित समाचारों को उपयोगी एवं अपेक्षाकृत स्पष्ट मानते हैं, किंतु इसके प्रति पूर्ण सहमति अभी विकसित नहीं हुई है । अतः कहा जा सकता है कि ए.आई. समाचारों की उपयोगिता एवं स्पष्टता को लेकर उपयोगकर्ताओं में मध्यम स्तर की स्वीकार्यता विद्यमान है ।

तालिका 5: ए.आई. से जुड़ी नैतिक चिंताएँ (N = 200)

चर	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
ए.आई. में पक्षपात (Bias) की संभावना	पूर्णतः असहमत	39	19.5
	असहमत	41	20.5
	तटस्थ	40	20.0
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0
ए.आई. से फेक न्यूज़ का प्रसार	पूर्णतः असहमत	40	20.0
	असहमत	41	20.5
	तटस्थ	39	19.5
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0
ए.आई. समाचारों में पारदर्शिता की कमी	पूर्णतः असहमत	39	19.5

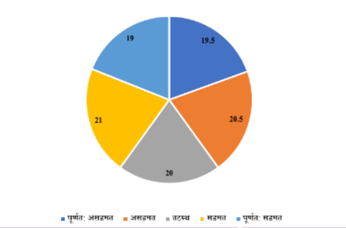

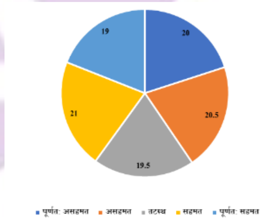

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

	असहमत	40	20.0
	तटस्थ	41	20.5
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0

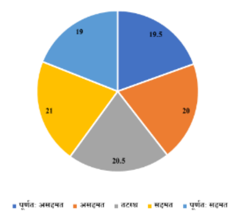

तालिका 5 में ए.आई. से संबंधित प्रमुख नैतिक चिंताओं, जैसे पक्षपात, फेक न्यूज़ के प्रसार की संभावना तथा पारदर्शिता की कमी के प्रति उत्तरदाताओं की धारणाओं को प्रस्तुत किया गया है । परिणामों से ज्ञात होता है कि लगभग 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने ए.आई. में पक्षपात की संभावना को स्वीकार किया, जबकि लगभग समान प्रतिशत प्रतिभागियों ने इससे असहमति व्यक्त की । इसी प्रकार, ए.आई. द्वारा फेक न्यूज़ के प्रसार की संभावना के संबंध में भी उत्तरदाताओं की राय विभाजित रही, हालांकि सकारात्मक प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक पाया गया । पारदर्शिता की कमी के संदर्भ में भी 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने चिंता व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि ए.आई.-जनित समाचारों में स्रोत, प्रक्रिया एवं उत्तरदायित्व की स्पष्ट जानकारी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण है । समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि ए.आई. की बढ़ती स्वीकार्यता के बावजूद नैतिकता, पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता से जुड़ी चिंताएँ अभी भी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण मुद्दे बनी हुई हैं ।

तालिका 6: ए.आई. बनाम मानव पत्रकारिता - मानव-निर्मित समाचारों की विश्वसनीयता (N = 200)

श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
पूर्णतः असहमत	38	19.0
असहमत	40	20.0
तटस्थ	42	21.0
सहमत	41	20.5
पूर्णतः सहमत	39	19.5
कुल	**200**	**100.0**

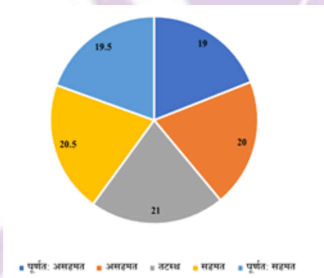

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

तालिका 6 में मानव-निर्मित समाचारों की विश्वसनीयता के संबंध में उत्तरदाताओं की राय प्रस्तुत की गई है । परिणामों से ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इस कथन से सहमति व्यक्त की कि मानव पत्रकारों द्वारा तैयार किए गए समाचार ए.आई.-जनित समाचारों की तुलना में अधिक विश्वसनीय होते हैं । वहीं 39 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इस कथन से असहमति व्यक्त की, जबकि 21 प्रतिशत प्रतिभागी तटस्थ रहे । यह परिणाम दर्शाता है कि उत्तरदाताओं के बीच पारंपरिक पत्रकारिता के प्रति विश्वास अभी भी मजबूत बना हुआ है । प्रतिभागियों का मानना है कि मानव पत्रकार समाचारों में संदर्भ, संवेदनशीलता, नैतिक उत्तरदायित्व तथा तथ्य-जांच जैसे पहलुओं को बेहतर ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं । अतः ए.आई. तकनीकों के बढ़ते उपयोग के बावजूद मानव पत्रकारिता की प्रासंगिकता और विश्वसनीयता अभी भी महत्वपूर्ण बनी हुई है ।

तालिका 7: ए.आई. का भविष्य एवं प्रभाव (N = 200)

चर	**श्रेणी**	**आवृत्ति (n)**	**प्रतिशत (%)**
भविष्य में ए.आई. का उपयोग बढ़ेगा	पूर्णतः असहमत	38	19.0
	असहमत	39	19.5
	तटस्थ	41	20.5
	सहमत	43	21.5
	पूर्णतः सहमत	39	19.5
ए.आई. का समग्र प्रभाव	पूर्णतः असहमत	39	19.5

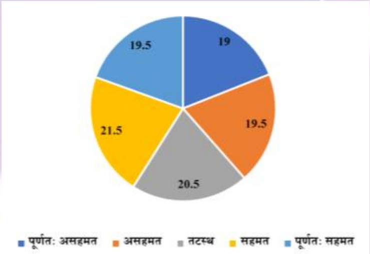

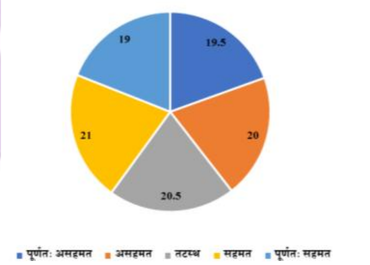

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

सकारात्मक है			
	असहमत	40	20.0
	तटस्थ	41	20.5
	सहमत	42	21.0
	पूर्णतः सहमत	38	19.0

तालिका 7 में ए.आई. के भविष्य एवं उसके समग्र प्रभाव के संबंध में उत्तरदाताओं की धारणाओं को प्रस्तुत किया गया है । परिणामों से ज्ञात होता है कि 41 प्रतिशत प्रतिभागियों (सहमत एवं पूर्णतः सहमत) का मानना है कि भविष्य में हिंदी डिजिटल मीडिया में ए.आई. का उपयोग और अधिक बढ़ेगा, जबकि 38.5 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इस कथन से असहमति व्यक्त की तथा 20.5 प्रतिशत प्रतिभागी तटस्थ रहे । यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता ए.आई. को पत्रकारिता के भविष्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं ।

ए.आई. के समग्र प्रभाव के संबंध में 40 प्रतिशत प्रतिभागियों ने सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया, जबकि 39.5 प्रतिशत प्रतिभागियों ने नकारात्मक राय दी तथा 20.5 प्रतिशत प्रतिभागी तटस्थ रहे । इससे स्पष्ट होता है कि उत्तरदाता ए.आई. की उपयोगिता और संभावनाओं को स्वीकार करते हैं, किंतु इसके साथ जुड़ी नैतिक, सामाजिक एवं विश्वसनीयता संबंधी चुनौतियों को भी गंभीरता से देखते हैं । समग्र रूप से कहा जा सकता है कि ए.आई. को हिंदी डिजिटल मीडिया के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में देखा जा रहा है, परंतु इसकी सफलता पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और जिम्मेदार उपयोग पर निर्भर करेगी ।

तालिका 8: ए.आई. जागरूकता एवं ए.आई. उपयोग के मध्य संबंध (N = 200)

ए.आई. के प्रति जागरूकता	ए.आई. का उपयोग करते हैं	ए.आई. का उपयोग नहीं करते	कुल
हाँ	68	34	102
नहीं	30	68	98
कुल	**98**	**102**	**200**

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

काई-स्क्वायर परीक्षण

परीक्षण	χ^2 मान	df	p-value	परिणाम
ए.आई. जागरूकता × ए.आई. उपयोग	26.73	1	0.001	सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण

तालिका 8 में ए.आई. के प्रति जागरूकता तथा ए.आई. टूल्स के उपयोग के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । परिणामों से स्पष्ट होता है कि ए.आई. के बारे में जानकारी रखने वाले 102 प्रतिभागियों में से 68 प्रतिभागी ए.आई. टूल्स का उपयोग करते हैं, जबकि केवल 34 प्रतिभागी इनका उपयोग नहीं करते । दूसरी ओर, ए.आई. के बारे में जानकारी न रखने वाले 98 प्रतिभागियों में से केवल 30 प्रतिभागी ए.आई. टूल्स का उपयोग करते हैं, जबकि 68 प्रतिभागी इनका उपयोग नहीं करते । काई-स्क्वायर परीक्षण के परिणामों के अनुसार $\chi^2 = 26.73$ तथा p-value = 0.001 प्राप्त हुई, जो 0.05 के स्तर से कम है । इसलिए शून्य परिकल्पना (H_0) अस्वीकार की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) स्वीकार की जाती है । इससे यह सिद्ध होता है कि ए.आई. के प्रति जागरूकता और ए.आई. टूल्स के उपयोग के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है ।

अर्थात जिन प्रतिभागियों को ए.आई. के बारे में जानकारी है, उनके द्वारा ए.आई. टूल्स का उपयोग किए जाने की संभावना अधिक पाई गई । यह निष्कर्ष दर्शाता है कि जागरूकता ए.आई. तकनीकों को अपनाने का एक महत्वपूर्ण कारक है । इसलिए ए.आई. के प्रभावी उपयोग को बढ़ाने के लिए डिजिटल साक्षरता, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा जन-जागरूकता अभियानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिंदी डिजिटल मीडिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) टूल्स के उपयोग, उनकी स्वीकार्यता तथा उनके प्रभाव का विश्लेषण करना था । अध्ययन के अंतर्गत 200 उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का आवृत्ति, प्रतिशत तथा काई-स्क्वायर परीक्षण के माध्यम से विश्लेषण किया गया । प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी डिजिटल मीडिया के क्षेत्र में ए.आई. का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है तथा उपयोगकर्ता इसके प्रति धीरे-धीरे जागरूक और अनुकूल होते जा रहे हैं । अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता ए.आई. के बारे में जानकारी रखते हैं तथा उनमें से एक बड़ा वर्ग विभिन्न ए.आई. टूल्स का उपयोग भी कर रहा है । परिणाम यह भी दर्शाते हैं

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

कि ए.आई.-आधारित समाचारों के प्रति उपयोगकर्ताओं की स्वीकार्यता विकसित हो रही है, हालांकि विश्वास, सटीकता और विश्वसनीयता के संदर्भ में अभी भी मिश्रित धारणाएँ मौजूद हैं । कुछ प्रतिभागियों ने ए.आई. समाचारों को उपयोगी, स्पष्ट और समयबद्ध माना, जबकि अन्य प्रतिभागियों ने इसकी विश्वसनीयता तथा मानवीय संवेदनशीलता को लेकर संदेह व्यक्त किया ।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि ए.आई. से जुड़ी नैतिक चिंताएँ, जैसे पक्षपात, फेक न्यूज़ के प्रसार की संभावना तथा पारदर्शिता की कमी, उपयोगकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण मुद्दे हैं । उत्तरदाताओं का मानना है कि ए.आई. तकनीक पत्रकारिता की कार्यक्षमता और गति को बढ़ा सकती है, किंतु इसके उपयोग में नैतिक मानकों और उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करना आवश्यक है । इसी कारण अधिकांश प्रतिभागियों ने मानव-निर्मित समाचारों को अभी भी अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय माना । काई-स्क्वायर परीक्षण के परिणामों ने यह सिद्ध किया कि ए.आई. के प्रति जागरूकता और ए.आई. टूल्स के उपयोग के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है । अर्थात जिन प्रतिभागियों को ए.आई. के बारे में अधिक जानकारी है, उनके द्वारा ए.आई. टूल्स के उपयोग की संभावना भी अधिक पाई गई । यह निष्कर्ष ए.आई. साक्षरता और तकनीकी जागरूकता के महत्व को रेखांकित करता है । समग्र रूप से कहा जा सकता है कि ए.आई. हिंदी डिजिटल मीडिया के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और भविष्य में इसका उपयोग और अधिक बढ़ने की संभावना है । तथापि, ए.आई. की सफलता केवल तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करेगी, बल्कि पारदर्शिता, विश्वसनीयता, नैतिकता तथा उपयोगकर्ताओं के विश्वास पर भी आधारित होगी । इसलिए मीडिया संस्थानों, नीति-निर्माताओं तथा शिक्षण संस्थानों को ए.आई. के जिम्मेदार, पारदर्शी और मानवीय उपयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्य करना चाहिए, ताकि पत्रकारिता की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को बनाए रखते हुए तकनीकी नवाचारों का लाभ प्राप्त किया जा सके ।

सुझाव

1. हिंदी डिजिटल मीडिया संस्थानों को ए.आई. टूल्स के उपयोग में पारदर्शिता सुनिश्चित करनी चाहिए तथा स्पष्ट रूप से उल्लेख करना चाहिए कि कौन-सी सामग्री ए.आई. द्वारा तैयार की गई है ।
2. ए.आई.-जनित समाचारों के प्रकाशन से पूर्व तथ्य-जांच और संपादकीय समीक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए, ताकि गलत सूचना और फेक न्यूज़ के प्रसार को रोका जा सके ।

3. पत्रकारों और मीडिया पेशेवरों के लिए ए.आई. संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे वे तकनीक का प्रभावी एवं जिम्मेदार उपयोग कर सकें ।

4. ए.आई. प्रणालियों में संभावित पक्षपात को कम करने के लिए विविध और विश्वसनीय डेटा स्रोतों का उपयोग किया जाना चाहिए ।

5. मीडिया शिक्षा के पाठ्यक्रमों में ए.आई. पत्रकारिता, डेटा पत्रकारिता तथा डिजिटल नैतिकता से संबंधित विषयों को शामिल किया जाना चाहिए ।

6. नीति-निर्माताओं और मीडिया नियामक संस्थाओं को ए.आई. के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देश विकसित करने चाहिए, जिससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता और उत्तरदायित्व बनाए रखा जा सके ।

7. भविष्य में अधिक व्यापक नमूने तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के संदर्भ में अध्ययन किए जाने चाहिए, ताकि ए.आई. के प्रभाव को अधिक समग्र रूप से समझा जा सके ।

संदर्भ सूची

- Newman, N., Fletcher, R., Robertson, C. T., Eddy, K., & Nielsen, R. K. (2023). Reuters Institute Digital News Report 2023. Reuters Institute for the Study of Journalism, University of Oxford. https://reutersinstitute.politics.ox.ac.uk/digital-news-report/2023
- Diakopoulos, N. (2019). Automating the news: How algorithms are rewriting the media. Harvard University Press. https://doi.org/10.4159/9780674239302
- Beckett, C. (2019). New powers, new responsibilities: A global survey of journalism and artificial intelligence. Polis, London School of Economics and Political Science. https://eprints.lse.ac.uk/129641/